IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 31, Issue 2, Series 1 (February, 2026) 171-175
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

गगनेन्द्रनाथ ठाकुर की कला में व्यंग्य, सामाजिक चेतना और आधुनिक दृष्टि : एक अध्ययन

प्रियंका वर्मा
शोद्यार्थी
चित्रकला विभाग
एम0एच0पी0जी0 कालेज, मुरादाबाद

प्रो0 नरेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
एम0एच0पी0जी0 कालेज मुरादाबाद

सारांष–

गगनेन्द्रनाथ ठाकुर का भारतीय आधुनिक कला में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गगनेन्द्रनाथ की कला में परिवर्तित समय, सामाजिक जीवन तथा समाज में हो रहे परिवर्तन को दिखाया है। इन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से समाज में चल रहे दिखावे, बनावटीपन, समाज में हो रहे भेद–भाव तथा अंधी नकल जैसी समस्या को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। गगनेन्द्रनाथ जी की चित्रकला में रंग तथा रेखा,आकृति विन्यास को विशेषकर के दर्शाया गया है। इनके अन्तिम समय के चित्रों में आधुनिक कला तथा घनवाद दिखाई देने लगता है।

इन्होंने भारतीय विषयों को एक नया मोड़ दिया है। इनकी कलाकृतियों में रेखा, आकृति और चित्र रचना का पूरा ध्यान दिया गया है। इन्होंने अपनी कलाकृतियों के द्वारा समाज के भिन्न–भिन्न रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनके चित्रों में भिन्न–भिन्न आयाम दिखाई देते हैं कही हॉस्य तो कहीं समाज।

चित्र सं0–1 धनेष्वरी

कुंजी शब्द–

गगनेन्द्र नाथ टैगोर, घनवाद, व्यंग्य चित्र, लोककला, अमूर्त कला, ज्यामितीय कला, बहुदृष्टिकोण।

प्रस्तावना–

आधुनिक कला में भारतीय कला के विकास का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस समय जो भी कलाकार कार्य कर रहे थे उन्होंने पारम्परिक विषयवस्तु को न बनाकर सामाजिक जीवन और बदलते समय को अपने विषय के रूप में चुना। गगनेन्द्र नाथ ठाकुर इसी परिवर्तन को चित्रित करने में माहिर कलाकार है। इन्होंने हमारे जो भारतीय विषय है उनको एक नया आयाम दिया है इनकी कला में विशेषकर रेखा चित्र रचना का नियम तथा आकृति पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन्होंने अपनी कलाकारी के द्वारा भिन्न–भिन्न सामाजिक रूपों को समझने का प्रयास किया है। गगनेन्द्रनाथ जी की कला में समाज की कमियाँ, हॉस्य तथा व्यंग दिखाई देता है।

गगनेन्द्रनाथ ठाकुर की कला में व्यंग्य

गगनेन्द्र ठाकुर जी का जन्म जोरासांको कलकत्ता पश्चिम बंगाल में सन् 1867 में हुआ था। इनके चाचा का नाम रवीन्द्रनाथ ठाकुर था। गगनेन्द्र नाथ की कला के अन्दर भरतीय विषयों के साथ जापानी तथा चीनी विषय भी अच्छे से विधमान है। इन्होंने कार्टून तथा हॉस्य–व्यंग्य चित्रों को गम्भीरता के साथ प्रस्तुत किया। इन्होंने भारतीय कला से जो भी अनुभव प्राप्त किया उसको एक तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ये सिर्फ अपने समाज को बाहरी वातावरण से न देखकर उसकी कमियॉ तथा समस्या को चित्रित किया है।

गगनेन्द्रनाथ के चित्रों में व्यंग्य चित्रों का विशेष स्थान रहा है। इन्होंने व्यंग्य चित्रों से लोगो को हँसाने के बजाय सामाजिक बुराई अंधी नकल तथा समाज में हो रहे दिखावे को चित्रित किया तथा साथ ही साथ आधुनिकता को भी चित्रित किया है। इन्होंने कार्टूनों के हाव–भाव तथा रूपों को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत किया है इससे सामाजिक समस्या की सोंच को बदलने का प्रयास किया है।

चित्र सं0–2 बंगाली दम्पत्ति

जामिनी रॉय ने भी लोककला से प्रेरणा ली, लेकिन उनकी शैली इतनी परिष्कृत और स्थिर हो गई कि उनके चित्र जीवंत सामाजिक संदर्भों से कटकर निर्जीव प्रतीकों में बदल गए। उन्होंने कालीघाट की सशक्त परंपरा से शब्दावली तो ली, परंतु उसमें व्यंग्य, ऊर्जा और सामाजिक संवाद की तीक्ष्णता नहीं रही।

इसके विपरीत, जामिनी रॉय के गुरु गगनेन्द्रनाथ टैगोर को इस नए लोक–कल्पनात्मक दृष्टिकोण का वास्तविक पूर्वज माना जा सकता है। वे अपने समय से आगे के कलाकार थे। उनकी बहुअर्थी चित्रकला ने आधुनिक भारतीय कला की भाषा को बदल दिया। उन्होंने जापानी ब्रश शैली, कालिघाट चित्रकला, क्यूबिज्म, फ्यूचरिज्म, समाचार–पत्रों के व्यंग्यचित्र और राजनीतिक पोस्टरों से प्रेरणा ली। वे एक आलोचक थे जो सामाजिक, सौंदर्यात्मक और नैतिक पतन को उजागर करते थे। उनकी रचनाओं में व्यंग्य, हास्य और सामाजिक आलोचना का अद्भुत संगम मिलता है।

गगनेन्द्रनाथ के लिए लोककला केवल अनुकरण का विषय नहीं थी, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत थी, जिसे उन्होंने आधुनिक दृष्टिकोण से पुनः रचा। वे विदूषक की तरह मिथकीय कथाओं के माध्यम से सत्ता की आलोचना करते थे। जैसे लोक–नाट्य में विदूषक जनता की आवाज बनता है, वैसे ही गगनेन्द्रनाथ की कला भी सामाजिक असंतोष को अभिव्यक्त करती है। उनकी कला में व्यंग्यचित्रकार की दृष्टि और बाजारू कला की जीवंतता का अद्भुत मिश्रण मिलता है–जो इस 'नए लोक–कल्पनात्मक दृष्टिकोण' का सार है।

यह निबंध समकालीन कलाकारों द्वारा अतीत के साथ किए गए प्रयोगों का कालानुक्रमिक अध्ययन नहीं है, बल्कि एक वैचारिक प्रस्तुति है, जिसमें उन कलाकारों के कार्यों का विश्लेषण किया गया है जिन्होंने धर्म, राजनीति और सामाजिक मान्यताओं से जुड़े आधिकारिक आख्यानों के विरुद्ध व्यंग्य और खेलात्मकता के माध्यम से वैकल्पिक कथाएँ प्रस्तुत की हैं।

चित्र सं0–3 स्टेषन

गगनेन्द्रनाथ जी सामाजिक चेतना को विशेष महत्व देते हैं। इन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से सामाजिक समस्या तथा उसे भली–भाँति समझाने का प्रयास किया है। इनकी कला में रंगों में भेद तथा सामाजिक प्रतिष्ठा और यूरोपीय, चीनी जापानी आदि विषय दिखाई देते हैं। आज के समाज में जो दिखावा हो रहा है तथा इसी बनावटीपन को अपने व्यंग्य चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनकी कला के द्वारा समाज की जागरूकता व्यक्त होती है।

गगनेन्द्रनाथ की आधुनिक दृष्टि

गगनेन्द्रनाथ की आधुनिक कला केवल यूरोपीय कलाकृतियों की नकल नहीं थी बल्कि इन्होंने रेखा, रंग तथा आकृतियों को लेकर चित्रों को एक नए तरीके से चित्रित किया है। इन्होंने अपने आधुनिक चित्रों के माध्यम से प्राचीन विषयों को एक नया अंदाज देने का प्रयास किया है। गगनेन्द्रनाथ जी के अन्तिम समय में आधुनिक कला तथा घनवाद का बहुत ही अच्छा समन्वय दिखाई देता है।

गगनेन्द्र नाथ जी की चित्रकला में रेखा का विशेष महत्व रहा है इन्होंने रेखा के माध्यम से वस्तु की सीमा न बनाकर बल्कि रेखा के द्वारा चित्रों की भाव और भंगिमा को प्रस्तुत किया है। ये अपने चित्रों को बदल–बदलकर तथा कुछ बढ़ा–चढ़ाकर चित्रित करते थे। इस प्रक्रिया से चित्रकृतियों के भाव और विचार अधिक रूचिकर लगते हैं। इन्होंने रेखाओं और आकृतियों का सहारा लेकर चित्रों में हॉस्य–व्यंग्य तथा गति को प्रदर्शित किया है।

गगनेन्द्र टैगोर बंगाल स्कूल के सबसे महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक थे। बंगाल स्कूल से सम्बन्धित जो भी कला–अध्ययन सामग्री प्राप्त हुयी है उसमें रेखाओं को बहुत ही प्रभावशाली तथा भारतीय संवेदना से मिला जुला बतायागया है। गगनेन्द्रनाथ की कला को देखने व परखने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि इन्होंने अपने चित्राकृतियों में रेखाओं का विशेष महत्व रखा है। इन्होंने अपने चित्रों को कई भागों में विभाजित किया है तथा सरल बनाने का प्रयास किया है। इससे इनकी कलाकृतियों में आधुनिक विस्तार एवं विकास की झलक दिखाई देती है।

चित्र सं0–4 कन्फ्यूजन ऑफ आईयाज

घनवाद और आधुनिक प्रयोग

गगनेन्द्र नाथ जी ने अपने घनवादी चित्रों में आधुनिकता को विशेष महत्व दिया है। इन्होंने अपने घनवादी चित्रों को तोड़–मरोढ़कर एक नये तरीके से प्रस्तुत किया है तथा व्यंग्य चित्रों के माध्यम से सामाजिक बुराई तथा समाज में हो रहे परिवर्तन को चित्रित किया है। गगनेन्द्र नाथ ने अपनी चित्रकला में तीक्ष्ण रेखाओं का प्रयोग किया है तथा ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई जिससे आधुनिक कला और घनवाद का अद्भुद समन्वय दिखाई देता है।

टेम्पल क्यूबिस्टिक :–

इस कलाकृति को बनाने के लिए घनवादी तकनीकि का प्रयोग किया है इसलिए इसे घनवाद की मुख्य पेन्टिंगों में से एक मानी जाती है। इस कलाकृति में मन्दिर की स्थापत्य को ज्यामितीय आलिन्दो में विभक्त किया गया है। इस चित्र में गहराई दिखाने के लिए प्रकाश और छाया का प्रयोग किया गया है। एन0.जी0एम0ए0 कला दीर्घा के अनुसार इन्होंने घनवादी कलाकृतियों को कई रंगों तथा काली स्याही के माध्यम से चित्रित किया है जिसका समय 1921–25 के मध्य का था।

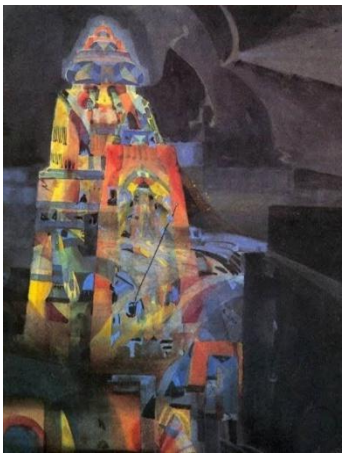

चित्र सं0–5 टेम्पल क्यूबिस्टिक

नाइटः–

इस चित्र में रात्रि को हुबहू न दिखाकर कई रंगों, आकारों तथा कोणों और टूटे हुए रूपों में चित्रित किया है। लाल, पीले, नीले रंगों के समन्वय से चित्र में एक विशिष्ठ प्रकार का रहस्य दिखाई देता है।

मैजिषियन :–

ज्यामितीय आकृतियों के माध्यम से गगनेन्द्रनाथ ने इस चित्र को पूर्ण किया है। इस कलाकृति को इन्होंने कई भागों में विभक्त करके चित्रित किया है। गगनेन्द्र नाथ ने चित्रों में नाटकीयता दिखाने के लिए हल्के व गहरे रंगों का प्रयोग किया है। इस कलाकृति में भारतीय तथा यूरोपीय घनवाद का सम्मिलन दिखाई देता हैं।

द डांस :–

इस चित्र के माध्यम से समाज के व्यंग्य को दिखाया गया है। इस कलाकृति में बंगाली जोड़े को यूरोपीय परम्परा में नृत्यरत दिखाया गया है। इस चित्र के माध्यम से यूरोपीय नकल पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है।

<u>भारतीय कला में योगदान</u>

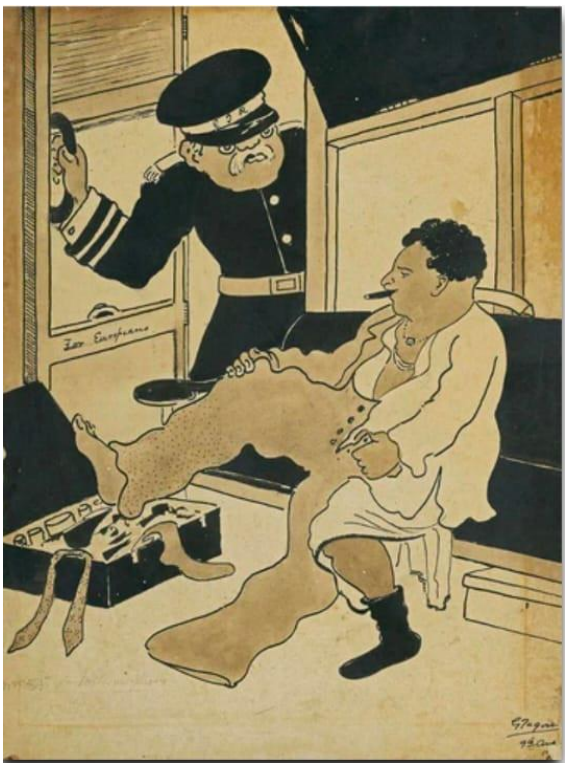

चित्र सं0–6 मेटामोरफोसेस

गगनेन्द्र नाथ ठाकुर ने भारतीय कला मुख्यताः से चित्रित किया है इन्होंने कार्टून चित्रों को भी चित्रित किया जिससे सामाजिक बुराई तथा कलात्मक अभिव्यक्ति, दिखावे को प्रस्तुत करने का प्रयास कया है।

इनके भारतीय विषयों में आधुनिकता का पूर्ण समावेश है। इन्होंने भारतीय परम्परा और आधुनिकता का बहुत ही अच्छा समन्वय प्रस्तुत किया है। यही वजह है कि इनकी कला के माध्यम से आधुनिक कला में हो रहे विकास को समझने में आसानी रहती है।

<u>निष्कर्ष :–</u>

गगनेन्द्रनाथ जी की कलाकृतियों में तीक्ष्ण रेखांकन ज्यामितीय तथा कोणीय आकृतियाँ, कार्टून और व्यंग्य चित्र, सामाजिक समस्या प्रकाश–छाया का एक आकर्षक समन्वय दिखाई देता है। इन्होंने मुख्यरूप से भारतीय कला को अपनाया लेकिन कहीं–कहीं पर यूरोपीय घनवाद को भारतीय घनवाद में परिवर्तित करके चित्रित करने का प्रयास किया है। इन्होंने अपने कार्टून चित्रों के माध्यम से सामाजिक समस्या पर व्यंग्य किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय समकालीन कला – प्राणनाथ मांगो।
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला – गिर्राज किशोर अग्रवाल।
3. आधुनिक चित्रकला का इतिहास – रा0वि0 साखलकर।
4. समकालीन भारतीय कला – ममता चतुर्वेदी।
5. भारतीय कला – ममता चतुर्वेदी।
6. आधुनिक कला के आधार स्तम्भ – प्रेमचन्द्र गोस्वामी।
7. समकालीन भारतीय कलाकार – गीता कपूर।
8. शोध पत्र व जनरल।

समस्त चित्र केवल गूगल से लेख के भावार्थ के समझने हेतु लिए गये हैं।